MA. Semester II

Paper 5, unit I 11/07/2025

Topic— दीर्घीकृत अवधान (Sustained attention)

Nature and theory of sustained attention)

किसी वस्तु या व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण के दौरान दीर्घीकृत अवधान (Sustain attention) एक महत्वपूर्ण घटना है, जो व्यावहारिक दृष्टि से काफी महत्व रखता है। दीर्घीकृत अवधान निगरानी (Vigilance) की प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अधिक समय तक किसी घटना या परिस्थिति पर सतर्कतापूर्वक अपने ध्यान को केंद्रित रखता है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान एक विशेष परिस्थिति में दीर्घीकृत अवधान का अध्ययन किया गया। उस समय रडार संचालकों (radar operators) में अवधान से संबन्धित समस्या देखा गया। उस रडार के संचालकों को दुश्मन के द्वारा आघात से रडार में उत्पन्न संकेतों की पहचान करनी थी। कुछ समय तक इस प्रकार के निगरानी करने के पश्चात संचालकों के कार्य-निष्पादन में गिरावट के लक्षण देखे गए। मैकवर्थ (Mackworth, 1950) ने पहला प्रयोग किया जिसमें इन्होंने रडार के अनुरूप प्रदर्शन हेतु एक घड़ी का उपयोग किया। इसलिए इसे घड़ी परीक्षण (clock test) कहा जाता है। इस घड़ीनुमा उपकरण में कोई सांकेतिक चिन्ह नहीं था केवल काले रंग की सूई (black pointer) थी जिनकी गति पर प्रयोज्य को सतर्कता के साथ निगरानी करने का निर्देश दिया गया।

घड़ी की सुई सामान्यतः 0.3 इंच की दूरी तय करती थी लेकिन कभी-कभी यह सुई की दूरी को दुगना अर्थात 0.6 इंच हो जाती थी। प्रयोज्य को यह निर्देश दिया गया कि जैसे ही सुई लगे दुगनी दूरी की छलांग सुई की अति सामान्य से तेज गति को देखें तो बटन दबाकर अनुक्रिया करें। प्रयोज्य को लगातार दो घंटे तक सावधानीपूर्वक निरीक्षणों के बाद यह पाया गया, देखा गया कि लगभग आधे घंटे तक सतर्कता के बाद दीर्घीकृत ध्यान देने के उपरांत प्रयोज्यों की सतर्कता में कमी आने लगी और प्रत्येक चार बार में एक बार तेजी के संकेत में से 1 बार का संकेत पहचानने में प्रयोज्य असफल होने लगा। इस प्रयोग के बाद दीर्घीकृत अवधान की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारकों का अध्ययन करने की दिशा में मनोवैज्ञानिकों की अभिरुचि बढ़ी। इन अध्ययनों से यह भी स्पष्ट हुआ कि दीर्घीकृत अवधान की गति काफी तीव्र होती है। अतः दीर्घीकृत अवधान के व्यक्ति के सतत सक्रिय मानसिक एकाग्रता का स्तर ऊँचा होना अनिवार्य है।

दीर्घीकृत अवधान की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारकों में संवेदी कारक (Sensory factors) संकेत या उत्तेजना की उत्कृष्टता (Signal conspicuity), पृष्ठभूमि घटना दर (background event rate), सामयिक एवं स्थानिक अनिश्चितता (temporal and spatial uncertainty) एवं परिणाम ज्ञान (Knowledge of result) आदि प्रमुख हैं।

इसके अलावे दीर्घकृत अवधान की व्याख्या(या) करने हेतु अनेक सिद्धान्त भी प्रतिपादित किए गए है।

जोरिसन एवं पिकेट (Jerison and Pickett, 1963) द्वारा प्रतिपादित प्रत्याशा सिद्धान्त (expectancy theory) प्रमुख है। इस सिद्धान्त के अनुसार जिन संकेतों पर दीर्घकृत अवधान देना होता है उसे संबंधित पूर्व से संचित सूचनाओं (stored information) तथा उन अवस्थाओं जिनसे कोई संकेत उत्पन्न हो सकता है का पूर्वानुमान (Prediction) दीर्घकृत अवधान में अहम भूमिका रखती है। इस सिद्धान्त के अनुसार संकेतों का सही पहचान करने की तत्परता और उक्त संकेत के उपस्थित होने की प्रत्याशा दोनों के बीच धनात्मक सहसंबंध होता है। अतः कोई विवेचित संकेत (Critical Signal) के किसी समय विशेष में उपस्थिति की संभावित प्रत्याशा उक्त उत्तेजना को सही पहचान करने की मानसिक तत्परता को बढ़ा देता है। फलस्वरूप संकेतों का पता लगाने का सामर्थ्य बढ़ जाता है इस आधार पर दीर्घकृत अवधान की निपुणता उन्नत होती है।

Kumar Patil
Maharaja College, Ara.